अव्यक्त इशारे
(अब अपनी श्रेष्ठ मन्सा द्वारा सूक्ष्म वृत्तियों से सेवा करो)

1) सेवा का सबसे सहज साधन है - वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल बनाना। जैसे साइंस की राकेट फास्ट जाती है वैसे आपकी रूहानी शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति दृष्टि और सृष्टि को बदल देती है। एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते हो।

2) जैसे मधुबन का वायुमण्डल हर एक के दिल में छप जाता है, ऐसे हर एक को अपनी श्रेष्ठ रूहानी वृत्ति से वायब्रेशन और वायुमण्डल बनाना है। लेकिन वृत्ति रूहानी और शक्तिशाली तब होगी जब अपने दिल में किसी के प्रति भी उल्टी वृत्ति का वायब्रेशन नहीं होगा। अपने मन की वृत्ति स्वच्छ चाहिए। अगर वृत्ति निगेटिव है, मन में किचड़ा है तो शुभ वृत्ति से सेवा नहीं कर सकेंगे।

3) आप विश्व कल्याणकारी बच्चे नॉलेजफुल बनो, कोई रांग है तो उसे रांग भल कहो लेकिन उनकी रांग बातों को मन में नहीं बिठाओ। कोई भी रांग बात अपनी वृत्ति में रखेंगे तो दृष्टि और सृष्टि बदल जायेगी, और मन की वृत्ति में अगर खराब चीज़ वा वेस्ट थॉट्स होंगे तो विश्व कल्याणकारी कैसे बन सकेंगे!

4) अभी समय प्रमाण वृत्ति से वायुमण्डल बनाने के तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है इसलिए वृत्ति में जरा भी किचड़ा न हो, तब प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा और वायुमण्डल बनेगा इसलिए हरेक की विशेषताओं को देखो और अपनी वृत्ति को सदा शुभ रखो। इसके लिए याद रखो कि "दुआ देना है और दुआ लेना है।" कोई भी निगेटिव बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दो।

5) आप क्षमा के सागर के बच्चे हो तो परवश आत्माओं को क्षमा दे दो। अपनी शुभ वृत्ति से ऐसा वायुमण्डल बनाओ जो कोई भी आपके सामने आये वह कुछ न कुछ स्नेह ले, सहयोग ले, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का, उमंग-उत्साह का अनुभव करे।

6) विश्व कल्याणकारी की स्टेज है - सदा बेहद की वृत्ति, दृष्टि और बेहद की स्थिति। वृत्ति में जरा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। दूसरे के निगेटिव को भी पॉजिटिव में चेंज कर दो। आपकी वृत्ति सर्व के प्रति सदा बेहद और कल्याणकारी हो।

7) जैसे मधुबन में ब्रह्मा बाप के कर्म साकार में होने के कारण इस भूमि में तपस्या, कर्म और त्याग के वायब्रेशन समाये हुए हैं इसलिए यहाँ हर एक सहज अनुभव करते हैं कि यह संसार न्यारा है। ऐसे आप बच्चे भी जहाँ रहते हो, जो आपका कर्मक्षेत्र है वहाँ आप द्वारा बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये।

8) चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष

कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

9) मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता का पालन तो करता हूँ,... सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ। अभी दृष्टि-वृत्ति की पवित्रता पर और अण्डरलाइन करो। मूल फाउण्डेशन है अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ, वृत्तियों को शुभ भावना से सम्पन्न बनाओ। सबका भला हो यह वृत्ति धारण करो तब आपको सब अपना मानेंगे।

10) अब स्व पुरुषार्थ में तीव्र बनो तब आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे, तो न आपकी माया जायेगी, न दूसरे की जायेगी। आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर ले। हाय-हाय करते आवें और वाह-वाह लेकर जायें।

11) सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते जितना न्यारा, उतना प्यारा - इसका बैलेन्स रहे। बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो। यह बेहद के वैरागी हैं, यह वृत्ति हर एक के दिमाग तक नहीं, दिल तक पहुँचे, अब इसकी आवश्यकता है, इससे ही आत्मायें समीप आयेंगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है, वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी।

12) आत्माओं को योग्य और योगी बनाना है, धरनी को तैयार करना है तो विशेष वाणी के साथ-साथ वृत्ति को और तीव्र गति देनी पड़ेगी क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल का प्रभाव प्रकृति पर पड़ेगा तब तैयार होंगे। तो डबल सेवा का सदा अटेन्शन रखो।

13) अगर श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति है तो सेकण्ड के संकल्प से, दृष्टि से अपने दिल के मुस्कराहट से सेकण्ड में भी किसी को बहुत कुछ दे सकते हो। जो भी आवे उसको कोई न कोई गिफ्ट जरूर दो, कोई भी खाली हाथ नहीं जावे।

14) वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ। अभी आराम की दिनचर्या मिक्स हो गई है। ये अलबेलापन शरीर की छोटी-छोटी बीमारियों के भी बहाने बनाता है। सेवा का उमंग बीमारी को भी मर्ज कर देता है।

15) हर व्यक्ति को, बात को पॉजिटिव वृत्ति से देखो, सुनो या सोचो। जैसे साइन्स के ऐसे साधन निकले हैं जो रफ माल को भी बहुत सुन्दर रूप में बदल देते हैं। ऐसे कोई भी नेगेटिव रूप में आवे आप उस निगेटिव को पॉजिटिव वृत्ति से बदल दो। क्यों, क्या, कैसे की हलचल में नहीं आओ।

16) युनिटी का अर्थ है बेहद की वृत्ति, बेहद की दृष्टि। अगर बेहद की दृष्टि और वृत्ति नहीं तो युनिटी नहीं हो सकती। सभी ब्राह्मण बेहद की वृत्ति, दृष्टि वाले बन जायें तो अपना राज्य आया कि आया क्योंकि वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा और वायुमण्डल बनेगा तो प्रैक्टिकल में

भी होगा।

17) सदा अच्छा-अच्छा सोचने से अच्छा हो ही जाता है क्योंकि आपकी अच्छी वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन कर देगी। अगर क्यों-क्या में जायेंगे-ऐसा है, ऐसा है तो कभी परिवर्तन नहीं होगा। अच्छा- अच्छा कहते जाओ तो अच्छे बन जायेंगे। अपनी मन्सा वृत्ति सदा अच्छे की, पावरफूल बनाओ तो खराब भी अच्छा हो जायेगा।

18) जैसे बापदादा को रहम आता है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर रहमदिल बन मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है तो तीव्र गति से सेवा करो।

19) कोई भी यह नहीं कह सकता कि हमको तो सेवा का चान्स नहीं है। कोई बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सेवा करो। तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे भी सहयोगी बनो, सिर्फ मन्सा में शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो।

20) अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो। इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्राब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

21) मन्सा वृत्तियों से वायुमण्डल का परिवर्तन करने के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए। 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। जिन श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली है, शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हैं वह मन्सा द्वारा शक्तियों का दान दे सकते हैं।

22) मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें-दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म शुभ-भावना, शुभ-कामना वाले हों। जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ होगी उसकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली शुद्ध होगी, शुभ-भावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे।

23) जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो तो कभी अपसेट नहीं होंगे। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। मन सदा सेट अर्थात् एकाग्र है तो स्वत: अच्छे वायब्रेशन फैलते हैं। सेवा होती है।

24) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वतः शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें

निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वत: होती रहे।

25) जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो। वाणी के साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।

26) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है - अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

27) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। इस समय की श्रेष्ठ प्रालब्ध है "सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना।

28) जितना स्वयं को मन्सा सेवा में बिज़ी रखेंगे उतना सहज मायाजीत बन जायेंगे। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं बनो लेकिन औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने की सेवा करो। भावना और ज्ञान, स्नेह और योग दोनों का बेलेन्स हो। कल्याणकारी तो बने हो अब बेहद विश्व कल्याणकारी बनो।

29) मन्सा-सेवा बेहद की सेवा है। जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देखकर के स्वत: ही आकर्षित होंगे। सिर्फ दृढ़ संकल्प रखो तो सहज सेवा होती रहेगी। वाणी द्वारा ज्ञान दान मैजॉरिटी करते हो लेकिन अब मन्सा द्वारा शक्तियों का दान करो, कर्म द्वारा गुण दान करो।

30) कोई भी स्थूल कार्य करते हुए मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। जैसे कोई बिजनेसमेन है तो स्वपन में भी अपना बिजनेस देखता है, ऐसे आपका काम है - विश्व-कल्याण 'करना। यही आपका ऑक्यूपेशन है, इस ऑक्यूपेशन को स्मृति में रख सदा सेवा में बिजी रहो।

31) सबसे पॉवरफुल और सबसे बड़े से बड़ी सेवा मन्सा सेवा है, इसके लिए अपने को पॉवरफुल बनाओ। अगर मन्सा थोड़ा भी कमज़ोर है तो मन्सा सेवा नहीं हो सकती। वाणी की कर सकते हो। तो अब मन्सा, वाचा, कर्मणा सब प्रकार की सेवा करो तब फुल मार्क्स ले सकेंगे।